12

जब मुर्गा बांग देता है

(मत्ती 26:31-75)

गांव में रहने वाले लगभग हर व्यक्ति ने मुर्गे को बांग देते हुए सुना और इस अहंकारी पक्षी को गर्दन फुलाकर गर्व से सुबह का स्वागत करते हुए देखा होगा। मुझे नहीं पता कि मुर्गा ऐसे क्यों करता है।[1] पर लगता है कि मटर के छोटे से दाने जितने उसके दिमाग में कहीं यह बात है कि उसके बांग दिए बिना सूर्य ही नहीं निकलेगा।

बचपन में मैंने मुर्गे के बांग देने के बारे में अलग-अलग विचार सुने थे। एक विचार था कि सुबह हो गई है। यह अच्छा विचार था। इसका अर्थ यह भी था कि मेरे लिए बिस्तर की गर्मायश से बाहर निकलकर काम शुरू करने का समय हो गया है, जो कि इतनी अच्छी बात नहीं थी।

इतिहास में एक आदमी के लिए मुर्गे का बांग देना, खुशी का नहीं बल्कि गहरे सदमे का कारण अवश्य बना। उस आदमी का नाम था पतरस। मत्ती 26:73-75 में पाई जाने वाली इस व्यथा का सार इस प्रकार है:

> थोड़ी देर के बाद, जो वहां खड़े थे, उन्होंने पतरस के पास आकर उससे कहा, सचमुच तू भी उनमें से एक है; क्योंकि तेरी बोली तेरा भेद खोल देती है। तब वह धिक्कार देने और शपथ खाने लगा, कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता; और तुरन्त मुर्ग़े ने बांग दी। तब पतरस को यीशु की कही हुई बात स्मरण आई कि मुर्ग़े के बांग देने से पहिले तू तीन बार मेरा इनकार करेगा और वह बाहर जाकर फूट-फूट कर रोने लगा।

पतरस के इनकार की कहानी का अध्ययन हम मुर्गे के बांग देने पर बल देते हुए करेंगे। इसके लिए हम मत्ती 26 में से आयतें लेंगे; परन्तु सुसमाचार की अन्य पुस्तकों में से भी कुछ प्रसंग लिए जाएंगे (मरकुस 14; लूका 22; यूहन्ना 18)। पहले हम मुर्गे के पतरस के लिए बांग देने को देखेंगे और फिर मुर्गे के हमारे लिए बांग देने को देखेंगे।

मुर्गे ने जब पतरस के लिए बांग दी

घोषणा और विरोध

मत्ती 26 में यीशु अटारी वाले कमरे में अपने प्रेरितों के साथ था। उसे मालूम था कि आगे क्या होने वाला है। उसने अपने अनुयायियों को चौकस करने का प्रयास किया। कहा जाता है कि ''चौकस हो जाने का अर्थ कमर कस लेना है।'' उसने बात यह कहते हुए आरम्भ की, ''तुम सब आज ही रात को मेरे विषय में ठोकर खाओगे'' (आयत 31)। यीशु के कहने का अर्थ था कि ''आज रात तुम मेरे कारण इतने लज्जित होओगे कि ठोकर खाकर गिर जाओगे।''

फिर यीशु ने जकर्याह 13:7 से उद्धृत किया, ''क्योंकि लिखा है कि मैं चरवाहे को मारूंगा; और झुण्ड की भेड़ें तितर-बितर हो जाएंगी'' (आयत 31ख)। चरवाहे को मारने की बात यीशु की मृत्यु के विषय में कही गई थी। भेड़ों के बिखर जाने की बात प्रेरितों के भाग जाने के बारे में थी।

बेशक यीशु सुझाव दे रहा था कि प्रेरित उसे छोड़ जाएंगे फिर भी वह उसने उनसे प्रेम करते रहना और उन्हें स्वीकार करते रहना था। आयत 32 में उसने अपने जी उठने और चेलों से फिर मिलने की बात बताई: ''परन्तु मैं अपने जी उठने के बाद तुम से पहले गलील को जाऊंगा।''

परन्तु पतरस को वह प्रेम और लगाव सुनाई नहीं दिया। उसे तो अपने और अन्य प्रेरितों के छोड़ जाने और उन्हें स्वीकार किया जाने की बात ही सुनाई दी। ''तब पतरस ने उससे कहा, 'यदि सब तेरे विषय में ठोकर खाएं तो खाएं, परन्तु मैं कभी भी ठोकर न खाऊंगा' '' (आयत 33)। अपने गुरु से यह कहने वाला कि ''आप गलत हैं, इस बार आप चूक गए!'' पतरस पहला और अन्तिम छात्र नहीं था।

पतरस ने अभी-अभी प्रभु भोज की स्थापना में भाग लिया था। उसने अन्य चेलों और प्रभु की संगति की थी। उसे लगा कि वह बड़ा मज़बूत हो गया है। ''ऐसा कभी नहीं हो सकता!'' वह ज़ोर देकर कह रहा था।

यीशु ने चेतावनी देते हुए विशेष कर पतरस से ही कहा, ''मैं तुझ से सच कहता हूं, कि आज ही रात को मुर्गे के बांग देने से पहले, तू तीन बार मुझ से मुकर जाएगा'' (आयत 34)। ''मुर्गे के बांग देने से पहले'' का अर्थ है ''सुबह होने से पहले।'' अन्य शब्दों में यीशु ने पतरस से कहा, ''अब से तीन, चार या पांच घण्टों के अन्दर अन्दर तू तीन बार मेरा इनकार करेगा।''

पतरस ऐसी बात सोच भी नहीं सकता था। यह तो दिन को रात, आसमान को ज़मीन, बर्फ को पानी और गर्मी को सर्दी कहने की तरह था। उसने कहा, ''यदि मुझे तेरे साथ मरना भी हो, तौभी मैं तुझ से कभी न मुकरूंगा'' (आयत 35)। आप 1 कुरिन्थियों 10:12 को याद कर सकते हैं: ''बात यह है कि जो समझता है कि मैं स्थिर हूं, वह चौकस रहे; कि कहीं गिर न पड़े।''

वास्तविकता एवं परिणाम

चेतावनी के बाद, यीशु और चेले अटारी वाले कमरे की वेदी से ''वास्तविक संसार'' अर्थात गतसमनी के बाग में चले गए। यीशु ने बाग में अन्दर जाने के लिए पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ ले लिया। उसने उनसे कहा ''जागते रहो, और प्रार्थना करते रहो'' (आयत 41), पर वे सो गए। पतरस को जब सुनना चाहिए था, तब वह बोल रहा था, अब उसे प्रार्थना करनी चाहिए थी, और वह सो रहा था। आश्चर्य की बात नहीं कि वह गिरने वाला था!

भीड़ आ गई और यहूदा ने यीशु की पहचान एक चुम्बन से करवाई। पतरस तैयार था: अपनी तलवार निकाल कर उसने प्रधान याजक के एक सेवक के कान का आप्रेशन कर दिया (आयत 51; यूहन्ना 18:10)। यीशु ने उसकी ओर देखते हुए कहा, ''अपनी तलवार काठी में रख ले क्योंकि जो तलवार चलाते हैं, वे सब तलवार से नाश किए जाएंगे'' (आयत 52)।

पतरस के विरोध की कल्पना करें, ''प्रभु आप रुक जाइए। मैंने कहा था न कि मैं आपके लिए जान भी दे दूंगा, देखो मैं अब जान देने को तैयार हूं। प्रभु, आप मेरे पीछे हो जाएं, मैं आप को बचा लूंगा। आप को हाथ लगाने से पहले उन्हें मेरी लाश पर से होकर जाना होगा।'' परन्तु यीशु ने कहा

''पतरस अपनी तलवार म्यान में रख।'' इस प्रकार पतरस का सामना यथार्थ से हुआ था। उसकी अपनी मानवीय योजनाएं थीं, परन्तु प्रभु की योजना नहीं थी।

अक्सर हमारी भी अपनी मानवीय योजनाएं होती हैं, होती हैं न ? हमारे पास अपनी सुरक्षा के साधन और योजनाएं: अपने घर, सम्पत्ति, नौकरी सेहत, शक्ति, विवाह, जीवन साथी और संतान होते हैं। परन्तु वे सब अचानक ले लिए जा सकते हैं। ऐसा होने पर हम अपने आप को कितना विवश पाते हैं ! हम पुकारते हैं, ''प्रभु तूने हमारे साथ ऐसा क्यों किया ?'' हो सकता है प्रभु यह चाहता है कि हम उस पर निर्भर रहना सीखें।

पतरस के अहं को चोट भी लगी थी क्योंकि यीशु ने उसे सब लोगों के सामने डांटा था।

पतरस को अब यथार्थ समझ में आने लगा था। भीड़ यीशु को पकड़कर ले गई। जैसा कि यीशु ने पहले ही कहा था, ''तब सब चेले उसे छोड़कर भाग गए'' (आयत 56)।

> और यीशु के पकड़ने वाले उस को कायफा नाम महायाजक के पास ले गए, जहां शास्त्री और पुरनिए इकट्ठे हुए थे। और पतरस दूर से उसके पीछे-पीछे महायाजक के आंगन तक गया, और भीतर जाकर अन्त देखने को प्यादों के साथ बैठ गया (आयतें 57, 58)।

एक अन्य वृत्तांत से पता चलता है कि यूहन्ना भी भीड़ के पीछे सरदार याजक के घर गया (यूहन्ना 18:15)

भीड़ उसी मार्ग से यानी बाग में से निकल कर किद्रोन नाले के पार वापस नगर में प्रधान याजक के घर तक लौट गई होगी, जिससे पर यीशु और उसके चेले आए थे। यूहन्ना प्रधान याजक के परिचितों में था (उसके साथ कोई व्यावसायिक सम्बन्ध था), इसलिए वह अंदर चला गया। फिर पतरस चला गया (यूहन्ना 18:16)।

पतरस आंगन में चला गया जो सभी भवनों के मध्य होगा। सुसमाचार के अन्य विवरणों में बताया गया है कि वहां कुछ आग जल रही थी, जो सर्दियों की शीत रात में गर्मायश के लिए से जलाई गई होगी। पतरस यह बहाना करते कि वह उन्हीं का आदमी है, सेंकने लगा। मत्ती 26:58 में कहा गया है कि वह गया कि ''अन्त को देखे।'' वह खुले दरवाजों और खिड़कियों में से मुकदमे की कारवाई को देख सकता होगा।

आगे बढ़ने से पहले इस पर ध्यान दें कि कोई अन्य चेले आंगन या यूं कहें कि शेर की मांद में नहीं घुसा था। यूहन्ना को छोड़[2] सब इधर-उधर भाग गये थे। इसलिए हम पतरस की उसके साहस और प्रतिबद्धता के लिए सराहना करते हैं।

फिर वास्तविकता एक घरेलू दासी के रूप में आ गिरती है जिसने पतरस और यूहन्ना को भीतर आने दिया था (यूहन्ना 18:17)। यह नन्ही लड़की आकर हट्टे-कट्टे मछुआरे को छोटी सी बात कहती है, ''यीशु गलीली के साथ तू भी था'' (आयत 69)। पतरस के पसीने छूटने लगे; कोयलों की आग से नहीं बल्कि भीड़ की गर्मी से, और हट्टा-कट्टा आदमी इस नन्ही लड़की के सामने ढेर हो गया: ''मैं नहीं जानता तू क्या बोलती है'' (आयत 70)। यह पहला इनकार था।

पतरस पीछे हट गया। आग से दूर होकर वह डेवढ़ी की ओर अंधेरे में होकर बैठ गया। अभी वह दूर नहीं हुआ था। एक और दासी ने उसे वहां पहचान लिया। ''जब वह बाहर डेवढ़ी में गया तब दूसरी ने उसे वहां देखकर उसको जो वहां थे, कहा; यह भी यीशु नासरी के साथ था'' (आयत 71) सुसमाचार के सभी विवरणों को मिलाने पर पता चलता है कि इस समय कई लोग वहां

उपस्थित थे। कम से कम दो ने तो यह कहा था, ''हां बिलकुल ठीक है यह यीशु नासरी के साथ ही था।''

पतरस के पसीने छूट गए होंगे। ''और वह सौगंध खाकर फिर मुकर गया कि मैं उस मनुष्य को जानता ही नहीं'' (आयत 72)। सौगंध का अर्थ वह नहीं होगा जिसे हम झूठ कहते हैं बल्कि यहूदी लोगों द्वारा आम तौर पर सौगंध खाने का ढंग है। उसने सौगंध खाकर कहा कि वह सच बोल रहा है। यह उसका दूसरा इनकार था।

त्रासदी और आंसु

पतरस के बलपूर्वक इनकार का परिणाम वही हुआ, जिसका अधिक डर था; इनसे उसका ध्यान अपनी ओर चला गया। एक छोटी सी भीड़ इकट्ठी हो गई। एक आदमी उसका रिश्तेदार था जिसका पतरस ने कान उड़ा दिया था। वे कहने लगे,[3] ''सचमुच तू भी उनमें से है; तेरी बोली से पता चलता है'' (आयत 73)।

गलीली लोगों के उच्चारण में फ़र्क था। उनके शब्दों का उच्चारण अस्पष्ट होता था। वे कई शब्द एक समान बोल जाते थे और कई अक्षर उनसे बोले ही नहीं जाते थे। दूसरे यहूदियों को उनके बोलने का ढंग इतना अटपटा लगता था कि आम तौर पर गलीलियों को यहूदी सभाओं में प्रार्थना करने की मनाही थी। इस प्रकार पतरस जब भी मुंह खोलता तो वह अलाबामा के बोस्टोनियम की तरह बोलता।[4]

''तब वह श्राप देने और सौगंध खाने लग गई मैं उस मनुष्य को जानता ही नहीं'' (आयत 74क)। पतरस ने मछुआरे जैसी गंवारू भाषा में अपने को कोसते हुए बात की होगी। पतरस चिल्ला रहा था: ''नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं जानता।'' इस प्रकार उसने तीसरा इनकार किया।

लूका ने यहां एक टिप्पणी जोड़ी है: ''जब प्रभु ने घूम कर पतरस की ओर देखा'' (लूका 22:61)। हो सकता है कि यीशु ने खिड़की या दरवाज़े में से देखा हो। हो सकता है यीशु ने एक से दूसरी जगह पेशी के लिए ले जाए जाते समय, पीछे मुड़कर देखा हो। जैसे भी देखा, इस सब के दौरान जो कुछ उसके साथ हो रहा था, यीशु देख रहा था कि पतस के साथ क्या हो रहा है।

यह समझ आने पर कि यह क्या हो गया है, पतरस की प्रतिक्रिया देखें, ''... और तुरन्त मुर्गे ने बांग दी। ... और वह बाहर जाकर फूट-फूट कर रोया'' (आयतें 74ख, 75ख)।

पाठ के दूसरे भाग में जाते समय इस दृश्य को ध्यान में रखें।

जब मुर्गा हमारे लिए बांग देता है

हम अपने आप को न धोखा न दें। हम सब वहीं खड़े हुए हैं, जहां पतरस खड़ा था। ''आई स्टुड वेयर मोज़ज़ स्टुड'' शीर्षक से दिवंगत फ्रेड मैकलंग का एक प्रवचन था, जिसमें उसने बताया था कि कैसे उसने फिल्मों में काम करने का अवसर गंवा दिया था। मूसा की तरह जिसने फिरौन का महल छोड़ दिया था, फ्रेड ने सेवा करने के लिए प्रसिद्धि और दौलत को ठुकरा दिया था। हो सकता है कि हम वहां खड़े न हो, जहां फ्रेड या मूसा खड़ा था, परन्तु हम वहां खड़े हैं, जहां पतरस खड़ा था।

आराधना में ''तेरा हूं ऐ रब्ब ... '' गाने से हमें दिलेरी मिलती है। हम दूसरे मसीही लोगों के

साथ होते हैं तो हमें लगता है कि हम बहुत मज़बूत हैं। हमसे कोई पूछे कि क्या हम कभी मसीह का इनकार कर सकते हैं तो हमारा उत्तर होगा, ''बिल्कुल नहीं!'' फिर हम ''यथार्थ की दुनिया'' में चले जाते हैं। परीक्षाएं आने पर, जब भीड़ हम पर दबाव डालती है, हमें विवश करती है, तो कहानी कुछ और ही होती है!

हाल ही में मैंने कई उदाहरण पढ़े हैं कि कैसे लोगों पर दबाव पड़ता है: एक बहरा लड़का सुनने वाली मशीन कान में नहीं लगाता, क्योंकि इससे वह अजीब दिखता है। एक लड़की जिसकी नज़र बिल्कुल जा चुकी है, डरती है कि कहीं लोगों को उसकी इसका पता न चल जाए, उसे दीवारों और अन्य चीज़ों से टकराना कबूल है। एक प्रयोग में, अल्पवयस्कों का यह कहना था कि छोटी-सी रेखा सबसे बड़ी है, क्योंकि दूसरे अल्पवयस्कों ने यही कहा था। कोई कहता है, ''हां, परन्तु वे तो नवयुवक हैं।'' नहीं, हम सब ऐसे ही करते हैं। क्या आप कभी किसी ऐसे चुटकले पर केवल इसलिए हंसे हैं कि दूसरे हंस रहे हैं, जबकि आप को पता हो कि इसमें हंसने वाली कोई बात नहीं है।

बहुत बार अपनी भली मंशाओं के सामने *हम मसीह का इनकार करते हैं।* उसका इनकार हम बातों से, कामों से या जब बोलने की आवश्यकता हो, तब खामोश रहकर करते हैं। कई बार उसका इनकार एक ही बार नहीं, बल्कि अनेक बार उसे अस्वीकार करके करते हैं और हमारा विवेक हमें जगाता नहीं है।

यह दिलचस्प है कि हम अपने विवेक को कुछ समय के लिए खामोश कर सकते हैं। आप को याद है, जब कारों में पहले-पहल सीट बैल्ट निकली थी तो बहुत से लोगों को, जिन्हें कार में बैठना होता था, याद दिलाना पड़ता था कि अपनी बैल्ट बांध लें। इसके लिए बज़र बजता था। बैल्ट का बक्कल न लगाने पर बज़र की घंटी बजती रहती थी। मेरे कई मित्रों को वह बज़र अच्छा नहीं लगता था। उन्हें बैल्ट लगाना भी अच्छा नहीं लगता था। इसलिए उन्होंने कारों से बज़र उतरवा दिए। कई लोगों ने बज़र के कनेक्शन कटवा दिए, कई तो सीट-बैल्ट पर बज़र लगा कर उसके ऊपर बैठ जाते थे। परन्तु जैसे भी हो, उन्होंने उन बज़रों को खमोश कर दिया। हम में से कई अपने विवेक के साथ ऐसा ही करते हैं। विवेक परमेश्वर का सबसे महत्वपूर्ण चेतावनी देने का साधन है, परन्तु यह हमें नहीं भाता, सो हम इसे अनदेखा कर देते हैं। हम ''इसका कनेक्शन कटवा कर'' चलते रहते हैं।

हम चलते जाते हैं *जब तक मुर्गा बांग नहीं देता* यानी जब तक कोई ऐसी बात नहीं हो जाती, जिसके कारण हमें अपने आप याद आ जाए और हम घर लौट आएं। यह बात किसी मित्र की हो सकती है। आप किसी बाइबल क्लास, प्रवचन, गीत या प्रार्थना में हो सकते हैं। सेहत खराब हो सकती है। किसी मित्र की मृत्यु हो सकती है। आर्थिक हानि हो सकती है। परिवार में कोई कमी आ सकती है। हमारे इर्द-गिर्द हमारी दुनिया की बुरी दशा हो सकती है।

बाइबल कई अलग-अलग तरह के ''मुर्गों'' की बात बताती है, जिनके साथ लोग जागते हैं। आदम और हव्वा के लिए मुर्गा बाग-ए-अदन में परमेश्वर के चलने की आहट था। दाऊद के लिए ''तू ही वह मनुष्य है'' कहने वाला मित्र था। योना के लिए यह मुर्गा मछली के पेट में रहना था। उड़ाऊ पुत्र के लिए यह सूअरों का गंदा खाना और उन फलियों के सहारे रहकर भूख की पीड़ा थी, यह कुछ भी हो सकता है।

यह जो भी हो, परन्तु मुर्गा बांग देता है; दोष लगाते हुए विवेक का पूरा बोझ हमारे ऊपर पड़े दबाव को पाते हुए चिल्ला उठता है, ''तुम दोषी हो, तुम दोषी हो।'' फिर हम चिल्लाते हुए प्रतिक्रिया करते हैं कि ''हमने क्या किया है? हम यह कैसे कह सकते थे? हम अपने आप को परमेश्वर से इतना दूर कैसे ले जा सकते थे?''

मुर्गे के बांग देने से तीन तरह की प्रतिक्रिया दी जाती है।

याद करने का समय

पहले तो यह कि स्मरण करने का समय होता है। हमारे पाठ से जुड़ा पवित्र शास्त्र का पद बताया गया है, ''तब पतरस को यीशु की कही हुई बात स्मरण आई'' (आयत 75क)।

हमें बेहतर ढंग से सिखाया गया है। हम जानते हैं कि जीवन कैसे जीना है। हमें पता है कि काम कैसे करना है। पर किसी कारण हम उस सबको, जो हमने सीखा है, भूल गए हैं। अब याद करने का समय है।

याद करना आवश्यक है। उड़ाऊ पुत्र ने अपने पिता के घर को याद किया। यीशु ने इफिसुस की कलीसिया से कहा, ''इसलिए स्मरण कर कि तू कहां से गिरा था'' (प्रकाशितवाक्य 2:5)।

आप को क्या याद करना आवश्यक है? याद करें कि परमेश्वर आप से प्रेम करता है, जैसे यीशु ने अपने चेलों से प्रेम करता था, फिर भी उस ने उनके तितर बितर हो जाने की बात कही थी। सुसमाचार के शुभ संदेश को याद करें कि उस सबके अर्थ को याद करें, जो यीशु ने अपने मारे जाने और जी उठने के बारे में अपने चेलों को बताया था। याद करें कि यदि आप घर लौट आएं तो परमेश्वर आप को क्षमा कर देगा। गिरने का अर्थ मृत्यु नहीं है, जब तक हम इसका अर्थ यह न होने दें।

पश्चाताप का एक समय

दूसरा, मुर्गे का बांग देना मन फिराने का समय होता है। ''और वह बाहर आकर फूट-फूट कर रोया'' (आयत 75ख)।

पतरस के मन में यीशु ... या लोगों के अगुओं ... या प्रबन्ध के विरुद्ध ... संसार की स्थिति के विरुद्ध ... या मछुआरों के साथ किए गए व्यवहार के विरुद्ध कोई कड़वाहट नहीं थी। पतरस के मन में *पतरस* के वह न बन पाने की जो उसे बनना चाहिए था, वह न कर पाने की, जो उसे करना चाहिए था, कड़वाहट थी।

अक्सर यहूदा और पतरस में तुलना की जाती है। यहूदा भी प्रभु को बेचने के बाद पश्चाताप से भर गया था। परन्तु कोई आंसू नहीं बहा था (तुलना मत्ती 27:3)। सांसारिक शोक और ईश्वरीय शोक में फर्क है (2 कुरिथियों 7:10), उदास हाने और पश्चात करने में फर्क है।

जब मुर्गा बांग देता है, तो वह समय हर्ष का नहीं होता है। हो सकता है कि आप मुर्गे को चुप कराने के लिए कुछ दाना डालने लगें। आप उसकी गर्दन मरोड़ने में भी लग सकते हैं। परन्तु परमेश्वर के उपाय में, मुर्गे की बांगें हमें जगाने, अर्थात अपने द्रोह की भयानकता को देखने में सहायक हो। इसलिए जब मुर्गा बांग देता है तो इससे हमारा दिल टूटना चाहिए; ताकि हम पश्चाताप कर सकें, ''हे परमेश्वर हमने पाप किया है, हमने विचारों, बातों और कर्मों से आप का इनकार किया है; परन्तु आपकी सहायता मिलने से हम बेहतर कर पाएंगे!''

नवीकरण का समय

यह हमें तीसरी बात याद दिलाता है कि मुर्गे का बांग देना नवीकरण का संकेत है।

कोई पूछ सकता है, ''आप को कैसे पता है कि पतरस के आंसुओं से सच्चे मन से पश्चाताप का पता चलता है न कि उदासी का?'' इसका उत्तर पतरस के अगले कार्यों से देखा जा सकता है। यीशु ने पतरस को एक और अवसर दिया और उसने इसका पूरा लाभ उठाया।

जब यीशु ने चेलों को बताया कि वे ठोकर खाएंगे तो उन्हें यह भी बताया कि वे तितर बितर हो जाएंगे, उसने यह भी कहा कि वह मरे हुओं से जी उठेगा और गलील में उनसे मिलेगा (मत्ती 26:31, 32)। उसके मरे हुओं में से जी उठने के बाद स्वर्गदूतों ने खुली कब्र पर स्त्रियों से कहा था, ''शीघ्र जाकर उसके चेलों से कहो, कि वह मृतकों में से जी उठा है और वह तुमसे पहले गलील को जाता है, वहां उसका दर्शन पाओगे'' (मत्ती 28:7)। यूहन्ना 21 अध्याय गलील की झील पर चेलों के यीशु से मिलने के बारे में और विशेष तौर पर पतरस के साथ यीशु की बातचीत के विषय में बताता है, जिसमें यीशु उनसे कई प्रश्न पूछता है:

> यीशु ने शमौन पतरस से कहा, हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र क्या तू इन से बढ़कर मुझ से प्रेम रखता है? उसने उस से कहा, हां, प्रभु, तू जो जानता है, कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूं: उसने उस से कहा, मेरे मेमनों को चरा। उसने फिर दूसरी बार उससे कहा, हे शमौन यूहन्ना के पुत्र क्या तू मुझ से प्रेम रखता है? उसने उससे कहा, हां, प्रभु तू जानता है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूं: उसने उस से कहा, मेरी भेड़ों की रखवाली कर। उसने तीसरी बार उससे कहा, हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझ से प्रीति रखता है? पतरस उदास हुआ कि उसने उसे तीसरी बार ऐसा कहा कि क्या तू मुझ से प्रीति रखता है? और उससे कहा, हे प्रभु, तू तो सब कुछ जानता है: तू यह जानता है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूं: यीशु ने उससे कहा, मेरी भेड़ों को चरा (यूहन्ना 21:15-17)।

पतरस ने तीन बार इनकार किया। तीन बार ही यीशु ने पतरस से प्रेम की पुष्टि करवाई।

मैं इस बात पर विशेष ध्यान दिलाना चाहता हूं कि यीशु के पास आज भी पतरस के लिए काम है, जो उसने करवाना है। तीन बार यीशु ने कहा, ''मेरी भेड़ों को चरा।'' पतरस ने ख़तरनाक पाप किया था; परन्तु पतरस ने छोड़ा नहीं था। वह प्रभु से दूसरा अवसर लेने के लिए आ गया था।

पतरस ने इस अनुग्रह भरे अवसर का पूरा लाभ उठाया। प्रेरितों के काम अध्याय 2 में हमें पिन्तेकुस्त के दिन उसे यीशु के मसीह होने की घोषणा करने के लिए खड़ा पाते हैं। प्रेरितों के काम अध्याय 10 में हम उसे कुरनेलियुस और उसके परिवार को वचन सुनाने के लिए कैसरिया में एक घर में जाते हुए देखते हैं।

आप न चाहें तो मुर्गे के बांग देने से अन्त नहीं होता, बल्कि यह एक नई शुरुआत हो सकता है, यदि हमारा उत्तर सकारत्मक हो। पतरस को ज़बर्दस्त अहसास हुआ था, जिससे वह और भी समझदा और प्रभु के लिए उपयोगी बन कर निकला था। पुरानी दंत कथा है कि बाद के जीवन में पतरस जब भी मुर्गे की बांग सुनता था तो प्रचार करते हुए लड़खड़ा जाता था और उसका चेहरा लाल हो जाता था; फिर वह और भी उत्साह, प्रेम और समझदारी से नई जगह से आरम्भ करता था।

भूल चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हो, अपने जीवन को नाश करने या परमेश्वर आप को जो

बनना चाहता है, उससे कम बनने न दें। मुर्गे का बांग देना, जाग उठने का संकेत होता है। यह नवीकरण या नये ढंग से आरम्भ होने का समय है।

सार

इस कहानी में ऐसी महत्वपूर्ण शिक्षा है, जिसे हम आसानी से भूल सकते हैं। सुसमाचार के सभी लेखकों ने पतरस के गिरने के बारे में बताया है। अधिकांश रूढ़िवादी विद्वानों का मत है कि सुसमाचार का मरकुस का वृत्तांत पहले लिखा गया था; इसलिए यह कहानी को लोगों तक पहुंचाने वाला पहला लेखक था। बहुत से यह समझते हैं कि सुसमाचार का मरकुस का विवरण वास्तव में यीशु की कहानी का पतरस द्वारा बताया गया विवरण है। पपियास का दावा था कि मरकुस रचित सुसमाचार पतरस द्वारा सुनाए गए वचन का लिखित रूप है। अन्य शब्दों में, स्पष्टतया पतरस इतने बड़े पाप को लोगों के सामने प्रकट वाला पहला व्यक्ति था।

यह तो ऐसे लगता है, जैसे पतरस कह रहा हो कि मैं आप को बताना चाहता हूं कि मेरे साथ क्या हुआ, ताकि आप लाभ ले सकें। इन शिक्षाओं को सीखें। पहले कोई भी गिर सकता है। मैं सोच भी नहीं सकता था कि मैं गिर सकता हूं, पर मैं गिरा, आप भी गिर सकते हैं। दूसरा, गिर जाने का अर्थ यह नहीं है कि सब कुछ खत्म हो गया है। प्रभु अनुग्रहकारी और दयालु है। वह आप को दूसरा अवसर अवश्य देगा। आप वापस लौट *सकते* हैं।

मुझे यह सोचना अच्छा लगता है कि यह पाठ किसी के लिए तो मुर्गे की बांग हो सकता है; जिससे उसे कम से कम, जो कुछ उसके साथ हुआ, उसका सामना करने, पश्चाताप करने और वापस आने के लिए प्रोत्साहित होने की शक्ति मिलती है।

शैतान के दो पसन्दीदा झूठ हैं। यदि आप ने प्रभु को ग्रहण नहीं किया है तो वह कहता रहता है, ''इतनी जल्दी क्या है। प्रभु की बात मानने में फुर्ती करने की आवश्यकता नहीं।'' आप के पास भयानक पाप करने के पश्चात दूसरा झूठ है कि ''अब तो तीर कमान से निकल चुका है; अब कुछ नहीं हो सकता। तुम बहुत दूर निकल चुके हो। झूठ के पिता पर विश्वास मत करें। प्रभु को अपना दिल देने में कभी भी इतनी जल्दी नहीं होती और न देरी ही होती है।

पतरस के पाप करने पर प्रभु ने रुक कर उसकी ओर देखा था। प्रभु अब आप की ओर देख रहा है। यह कैसा देखना है ? खुशी से देखना है ? निराशा से देखना है ? जैसा भी हो। मुझे विश्वास है कि यह प्रेम से और तरस से देखना है।

यदि आप ने मसीह में बपतिस्मा नहीं लिया और प्रभु के पास वापस नहीं आए हैं तो क्या आप उसे अपने मन को छूने देंगे ?

टिप्पणियां

[1]मेरे एक मित्र चैस्टर डेविड का सुझाव है कि ऐसे करके मुर्गा लड़ाई का संकेत देता है। [2]हम नहीं जानते कि मुकदमे के दौरान यूहन्ना कहां था। शायद उसे कार्रवाई देखने के लिए अन्दर आने की आज्ञा नहीं मिली थी। [3]अमेरिका में ये दो भिन्न बोलियां हैं। समझाने के लिए स्थानीय बोलियों का इस्तेमाल किया जाता है।